

| छन्दसां वृत्तिनामानि ।                 | छन्दसां लक्षणगणाः ।  | छन्दसामुदाहरणानि ।   |
|--|--|--|
| अनुष्टुप                               | पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।<br>गुरु षष्ठश्च पादानां श्लेषेनियमो मतः ॥<br>प्रयोगे प्रायिकं प्राहुः केऽप्येतद्वृत्तलक्षणम् ।<br>लोकेऽनुष्टुबिति स्थातं तस्मादाचरता मता ॥                         | पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।<br>गुरु षष्ठश्च पादानां श्लेषेनियमो मतः ॥  |
| प्रथमे चरणे ८                          | ४१२११२४१   |  |
| द्वितीये ८                             | ४१२११२४१   |  |
| तृतीये ८                               | ११२४१२४१   |  |
| चतुर्थे ८                              | ४११११२४१   |  |
| इति वृषभमृत्तानि समाप्तानि ॥३॥         |  |  |
| अथ भाचावृत्तानि ।<br>आर्या अर्यात् आथा | लघ्वेतत् सप्तमस्या गोपेता भवति नेह विषमे जः ।<br>षष्ठो जश्च न लघु वा प्रथमार्द्धे नियतमाग्याथाः ॥<br>षष्ठे द्वितीयलात् परके नूये सुखलाच्च सयतिपद-<br>नियमः ।<br>चरमेऽर्द्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो जः ॥ | लघ्वः शिशुः सुतो मे वल्लवकुलटाभिराहृतो न गृहे ।<br>सखमपि वसन्तसाविति जगाद गोहृतां यशोदार्था ॥                                  |
| प्रथमे पादे १२                         | ४२१२४२४  |  |
| द्वितीये १८                            | ४१११२१२११२४  |  |
| तृतीये १२                              | ११११२४२११  |  |
| चतुर्थे १५                             | १२४२४२४२४  |  |
| प्रकारान्तरो यथा                       |  |  |
| प्रथमे पादे १२                         | ४२१२४२४  |  |
| द्वितीये १८                            | ४२११२१११११२४   |  |
| तृतीये १२                              | ४१२११२४  |  |
| चतुर्थे १५                             | ४२११११२४२४   |  |
| नवधा आर्या क्रमेण यथा ।                |  |  |
| पथ्या                                  | [पथ्या ।<br>प्रथमगणत्रयविरतिर्दलयोरुभयोः प्रकीर्तिता   |  |
| प्रथमे पादे १२                         | १११२११२४   |  |
| द्वितीये १८                            | ४१२४२४२४२४२४   |  |
| तृतीये १२                              | १११२१११२४  |  |
| चतुर्थे १५                             | ४२११२४२४२४   |  |
| विपुला                                 | संलङ्घ्य गणत्रयमादिमं शुक्लयोर्द्वयोर्भवति पादः ।<br>यस्यास्मात् पिङ्गलनामो विपुलामिति समाख्यातिः ॥  |  |
| प्रथमे पादे १८                         | ४२११२४२११२४  |  |
| द्वितीये १२                            | ४१११२४२४   |  |
| तृतीये १४                              | ४११२४२४२४  |  |
| चतुर्थे १२                             | ४२४२११२४   |  |
| चपला                                   | दलयोर्द्वितीयतुर्थौ गणौ अकारौ तु यच्च<br>चपला सा ।   |  |
| प्रथमे पादे १२                         | ११२४२४२४   |  |
| द्वितीये १८                            | १२४२४२४२४२४२४  |  |
| तृतीये १२                              | ४२४२४२४  |  |
| चतुर्थे १५                             | १२४२४२४२४  |  |
| मुखचपला                                | आदां दलं यमस्तं भजेत लघ्वं चपलागतं यस्याः ।<br>शेषः पूर्वजलस्या मुखचपला सोऽस्ति सुगिता ॥   |  |
| प्रथमे पादे १२                         | ४११२४२४  |  |
| द्वितीये १८                            | १२४२४२४२४२४२४  |  |
| तृतीये १२                              | ४१११२४२४   |  |
| चतुर्थे १५                             | ४१२४१११२४  |  |
|  |  | नन्दसुत ! वचकणं दृढं न ते प्रेम गच्छ तत्रैव ।<br>यच्च भवति ते रागः कापि जगादेति मुखचपला ॥<br>अत्र द्वितीयपदान्तलघोर्गुं बलम् ॥ |